2 जुलाई, 2015

रूस और साइप्रस के संबंध के पीछे की गतिविधियां

डॉ. इंद्राणी तालुकदार*

यूक्रेन संकट, वैश्विक आर्थिक संकट, आइएसआइएस के खतरे, यूक्रेन संकट में रूस के 'तथाकथित' हस्तक्षेप, क्रीमिया के विलय, मास्को पर प्रतिबंध और साइप्रस की अस्थिर अर्थव्यवस्था के बीच, मास्को और निकोशिया के संबंध में पलटाव नहीं आया है। यूरोप और एशिया के भौगोलिक फॉल्ट लाइन के बीच लाभप्रद स्थिति में अवस्थित साइप्रस को पश्चिमी शक्तियों और रूस दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण देश के रूप में देखा जाता है। साइप्रस, जिसे मंद अर्थव्यवस्था के रूप में देखा जाता है, ने रूस के प्रति अपनी संवेदनशीलता व्यक्त की है, जिसके परिणामस्वरूप रूसी आर्थिक दिग्गज (ज़ार) आर्थिक बढ़ोत्तरी और सुरक्षा के लिए इसे एक महत्वपूर्ण गंतव्य मानते हैं।

रूस पर लगाए गए प्रतिबंध, जिसमें कुलीन वर्ग और मीडिया प्रमुख (टाइकून) शामिल थे, जिनके खाते और लेन–देन फ्रीज कर दिए गए हैं, (उनको) इससे उबरने के लिए कठिन विकल्प दिए गए हैं। जब मास्को पर प्रतिबंध लगाए गए थे, तब यूरोपीय संघ (EU) में ही मतभेद पैदा हो गए थे। यूनान, साइप्रस और हंगरी यूरोपीय संघ (EU) के ऐसे सदस्य थे, जो प्रतिबंधों से खुश नहीं थे, क्योंकि वे समझते थे कि ये प्रतिबंध न केवल रूस को बल्कि यूरोपीय संघ (EU) के देशों को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करेंगे क्योंकि उनकी अर्थव्यवस्थाएं आपस में घनिष्ठता से जुड़ी हुई हैं। यूरोप पर मास्को द्वारा लगाए गए जवाबी प्रतिबंधों ने इन देशों की पहले से ही डगमगाती अर्थव्यवस्थाओं पर अपना प्रभाव प्रदर्शित करना प्रारंभ कर दिया है।

इन प्रतिबंधों के मामले में यूरोपीय संघ (EU) स्वयं ही हिचकिचाता रहा है क्योंकि रूस इन देशों के लिए ऊर्जा का प्रमुख निर्यातक है। यूनान और साइप्रस, जो पहले ही यूरोपीय संघ (EU) के कठोर वित्तीय मांगों के कारण कमजोर अर्थव्यवस्था के दबावों से जूझ रहे हैं और जिन्होंने रूस पर प्रतिबंधों के विरूद्ध

खुलकर अपनी राय व्यक्त की है, वे रूस और अमरीका समर्थित यूरोपीय संघ (EU) के बीच प्रतिबंधों के संघर्ष के शिकार हो गए हैं।

अमरीका और यूरोप के लिए भूमध्यसागर क्षेत्र महत्वपूर्ण रणनीतिक चौकियों (आउटपोस्ट) में से एक है, क्योंकि साइप्रस, यूनान और तुर्की जैसे कुछ देशों में नाटो के स्वयं के अड्डे हैं। सीरिया, जो पूर्वी भूमध्यसागर के गैर-नाटो देशों में से एक है, दायेस सहित असद समर्थक तथा विरोधी बलों के बीच की लड़ाई में फंस गया है। रूस, जिसका तारतूस में एक नौसैनिक अड्डा है, मौजूदा अड्डे के अलावा इस क्षेत्र में एक अतिरिक्त अड्डे की तलाश में है, ताकि इस क्षेत्र में इसके रणनीतिक और आर्थिक हित दायेस के संगठित होने के कारण बाधित न हों क्योंकि यह आगे चलकर रूस के लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस संबंध में, साइप्रस अपनी रणनीतिक/सामरिक अवस्थिति के कारण रूस के लिए अनुकूल है।

आईएसआईएस के खतरे के अलावा वर्ष 1974 के बाद इस द्वीप के विभाजन और उत्तरोत्तर कमज़ोर होती अर्थव्यवस्था के कारण साइप्रस की अपनी समस्याएं हैं। अमरीका के नेतृत्व में लगाए गए प्रतिबंधों के जवाब में रूस द्वारा थोपे गए जवाबी प्रतिबंध इस मुद्दे को और गंभीर बना रहे हैं जिससे साइप्रस के लिए स्थिति विकट होती जा रही है। यह देश इस गोरखधंधे में फंस गया है और रूस और अमरीका के माध्यम से अपनी ऋण से बोझिल अर्थव्यवस्था को ऊपर उठाने और इस क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण सीमाचौकी (आउटपोस्ट) की रक्षा करने के लिए अपना मार्ग बनाना चाहता है।

रणनीतिक अवस्थिति और प्रभावशाली शक्तियों के हित

अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था पश्चिम से पूर्व की ओर सत्ता के केन्द्र में प्रतिमान बदलाव का साक्षी बन रही है। अमरीका और यूरोप के लिए भूमध्यसागर क्षेत्र के इस भू-रणनीतिक केन्द्र के साथ पश्चिम समर्थक गठजोड़ कायम रखना विश्व व्यवस्था में अपना प्रभाव जमाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

साइप्रस भूमध्यसागर के उत्तर-पूर्वी छोर पर अवस्थित है। यह द्वीप यूरोप, अफ्रीका और एशिया के तिराहे पर पड़ता है। यह हिन्द महासागर के साथ स्वेज नहर और बब अल-मंदब के समुद्री दरवाजों के माध्यम से भूमध्य सागर को जोड़ने वाले समुद्री राजमार्ग के गलियारे में अवस्थित है, जो होरमुज जलडमरूमध्य से फारस की खाड़ी और मलक्का जलडमरूमध्य होते हुए प्रशांत महासागर तक जाता है।[1] इस देश का आकार छोटा है, लेकिन इसकी रणनीतिक अवस्थिति इस देश को अंतराष्ट्रीय प्रणाली के भू-राजनीतिक आव्यूह में परम आवश्यक बना देती है। इसे वाणिज्यिक और सैन्य दोनों प्रकार से एक आधार

के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि यह यूरोप को पश्चिम एशिया और सुदूर पूर्व से जोड़ने वाले व्यस्त जल तथा वायु मार्गों के नज़दीक अवस्थित है।

वर्ष 1960 में अपनी आज़ादी से पहले तक साइप्रस ब्रिटिश शासन के अधीन था और ब्रिटेन निकोशिया से दो महत्वपूर्ण सैन्य अड्डे, अक्रोत्तिरी और धेकेलिया, को प्राप्त करने में सफल रहा था।[2] इसके पहाड़ों, विशेषकर माउन्ट त्रूदोस के साथ साथ इसके अड्डों ने शीतयुद्ध काल से ही सम्पूर्ण भूमध्यसागर के लिए पश्चिमी रक्षा प्रणाली के इलेक्ट्रानिक सूचना प्राप्तकर्ता की महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।[3] निकट पूर्व (नियर ईस्ट) क्षेत्र में तेल तथा गैस के विशाल भंडार और राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक असहमति के कारण, पश्चिम साइप्रस की अवस्थिति का उपयोग एक खुफिया और संभार-तंत्रीय केंद्र के रूप में किया जा रहा है। अमरीका और नाटो के लिये ये अड्डे जर्मनी से पूर्वी यूरोप तक एक सम्पर्क तंत्र बनाते हैं और पश्चिमी एशिया में सैन्य अभियानों को प्रारंभ करने में मदद करते हैं।[4]

साइप्रस की रणनीतिक अवस्थिति इसे अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में महत्वपूर्ण बनाने के साथ-साथ असुरक्षित भी बनाती है। साइप्रस लघु द्वीप विकासशील राष्ट्रों (एसआइडीएस) की श्रेणी में आता है, जिन्हें विशेष (प्रकार के) सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय असुरक्षाओं का सामना करने वाले विकासशील देशों के विशिष्ट समूह के रूप में संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त है।[5] साम्राज्यवादी काल से ही यह द्वीप यूनानी, मेकडोनियन, विनीशियन, तुर्क, ब्रिटिश जैसे विभिन्न शासकों के अधीन रहा है। उपनिवेशवाद की जटिलताओं और बाह्य शक्तियों के हस्तक्षेप ने इस द्वीप को 1974 से ही विभाजित करके रख दिया है और सुरक्षा खतरों के प्रति अतिसंवेदनशील भी बना दिया है। हालांकि, इसके साथ ही यह अपनी रणनीतिक अवस्थिति के कारण बड़ी शक्तियों के बीच स्वयं को एक महत्वपूर्ण देश के रूप में बनाए रखने में समर्थ रहा है। इसने शक्तिशाली देशों के बीच स्वयं को समान रूप से संतुलित रखा है। यह बड़ी शक्तियों के मोहरे के रूप में अपनी वही स्थिति दोहराना नहीं चाहता, जैसी कि औपनिवेशिक और शीत युद्ध के दौरान थी।

साइप्रस और इज़रायल में प्राकृतिक गैस और अपतटीय तेल की खोज के साथ-साथ यूनान और लेबनान में संभावित खोजों ने इन देशों को इस क्षेत्र को एक वैश्विक ऊर्जा केंद्र के रूप में स्थापित करने का अवसर दिया है। साइप्रस के पास यूरोप तथा इसके सुदूर क्षेत्रों के लिए एक प्रमुख ऊर्जा आपूर्तिकर्ता बनने की क्षमता है। तेल और प्राकृतिक गैस की खोज के साथ-साथ यूरोप और इसके सुदूर क्षेत्रों के आपूर्तिकर्ता बनने की क्षमता होना भी साइप्रस तथा इस क्षेत्र को एक विशाल भूराजनीतिक परिदृश्य में ले आती है, जिनके पास यूरेशिया के कुछ भाग सहित पश्चिम तथा पूर्व के बीच के संघर्ष के चरम बिंदु (फ्लैशप्वाइंट) बनने की क्षमता मौजूद है।[6]

रूस की स्थिति और इसके हित

भूरणनीतिक हितों के इस जटिल जाल में रूस की स्थिति पेचीदा है। यह पश्चिम के दबाव की नीतियों द्वारा धमकाया हुआ महसूस करता है। रूस के हित – प्रभावित करने की क्षमता, हथियारों का निर्यात और ऊर्जा कूटनीति – इसके पूर्ववर्ती, सोवियत संघ की कूटनीति का ही विस्तार है। इसी प्रकार, रूस और पश्चिम के बीच प्रतियोगिता जारी है जैसी कि सोवियत संघ तथा पश्चिम के बीच थी।

वर्तमान में, नाटो के माध्यम से अमरीका के नेतृत्व में पश्चिम रूस के साथ टकराव की मुद्रा में है, जबसे पिछले वर्ष राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के नेतृत्व में क्रेमलीन सरकार द्वारा क्रीमिया का विलय कर लिया गया था। दोनों ही पक्षों ने रूस के पड़ोस में अपने सैन्यीकरण को बढ़ा दिया है, जिसके कारण राष्ट्रपति पुतिन द्वारा हाल में 'परमाणु हमले की धमकी' दी गई यदि क्रीमिया को पश्चिम द्वारा जबरन यूक्रेन में मिलाया जाता है।[7]

मास्को ने अपने प्रभाव क्षेत्र, अर्थात 'निकट बाह्य क्षेत्र' में नाटो और यूरोपीय संघ (EU) की सदस्यता के विस्तार के संबंध में अपनी असहजता स्पष्ट की है। यह हमेशा से ही अपने आस-पास के क्षेत्रों, जैसे निकट पूर्वी क्षेत्र, में नाटो तथा यूरोपीय संघ (EU) की उपस्थिति के संबंध में असुरक्षित रहा है। नाटो मास्को के विरूद्ध अपनी गुप्त नियंत्रक नीति के भाग के रूप में इन पूर्व-सोवियत गणराज्यों की रक्षा करने का प्रयास करता रहा है। यह यूरोपीय संघ (EU) की भी सुरक्षा करेगा क्योंकि ये गणराज्य नाटो के लिए प्राथमिक रक्षा पंक्ति का कार्य करेंगे।

रूस पश्चिम के वर्चस्व से अपने प्रभाव तथा हितों की रक्षा करने की कोशिश कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह (रूस) पश्चिम के साथ अपने संबंधों के आधार पर, अपनी गलत गणना के कारण चूक गए अवसरों को सुधारने का भी प्रयास कर रहा है। पश्चिम द्वारा रूस पर लगाए गए कठोर प्रतिबंधों ने चूके हुए अवसरों - जैसे कि साइप्रस के मामले में - के संबंध में कुछ आत्मनिरीक्षण करने पर इसे मजबूर किया है।

रूस- साइप्रस संबंध का चार्ट

पूर्व सोवियत संघ और साइप्रस के बीच अच्छे द्विपक्षीय संबंध थे। ये संबंध रूस के साथ जारी रहे। वर्ष 2008 में रूस और साइप्रस ने द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से एक संयुक्त घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस दस्तावेज ने वार्ता में तेजी लाने की दोनों पक्षों की प्रतिबद्धता का खाका तैयार कर दिया - जहाँ निकोशिया मास्को तथा यूरोपीय संघ (EU) के बीच संबंध बढ़ाने में योगदान दे रहा था और मास्को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद

(यूएनएससी) रूपरेखा के भीतर इस द्वीप के पुन: एकीकरण का समर्थन कर रहा था। इसके अलावा, दोनों ही देश वैश्विक खतरों से निपटने और संगठित अपराध का मुकाबला करने पर सहमत हुए और वर्ष 2010 में उन्होंने दोहरे कराधान के उन्मूलन पर एक महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर किए।[8] इस उन्मूलन के कारण रूसी व्यापारियों के द्वारा साइप्रस में नकदी का प्रवाह हुआ और यह उनके लिए राजकोषीय आश्रय बन गया। हालांकि संदिग्ध स्रोतों से धन के प्रवाह के अलावा इसका एक बड़ा भाग उपयुक्त रूसी निवेशकों से आता है जिन्होंने अपने निवेश की रक्षा के लिए यूरोपीय कानूनों के तहत सुरक्षा की अपेक्षा की है। अधिकांश रूसी व्यापारी रूसी आर्थिक प्रणाली के भीतर कुछ कमियों के कारण अपने ही देश में निवेश करने के प्रति सावधान हैं, जैसेकि इसकी बैंकिग प्रणाली में निवेशक के भरोसे और विश्वास की कमी, स्वतंत्र न्यायपालिका की कमी, व्यापक भ्रष्टाचार, प्रतिकूल व्यापारिक वातावरण और अपर्याप्त निवेशक सुरक्षा करार।[9] साथ ही, क्रेमलिन सरकार का अत्यधिक हस्तक्षेप रहता है, जो अधिकांश व्यापारियों को हतोत्साहित करता है। साइप्रस अपने व्यापार अनुकूल माहौल के कारण एक आकर्षक गंतव्य बना हुआ है।

रूस और साइप्रस के बीच व्यापार की मात्रा आयात-निर्यात और पर्यटन व्यापार पर निर्भर करती है। वर्ष 2013 में, दोनों देशों के बीच का व्यापार 811 हजार यूरो आँका गया था।[10] वर्ष 2013 में साइप्रस से रूस को किया जाने वाला निवेश 22.7 अरब डॉलर के बराबर था जबकि रूस से साइप्रस की अर्थव्यवस्था को किया जाने वाला निवेश 19 अरब डॉलर था।[11] साइप्रस रूस में खनन, धातुकर्म और कृषि क्षेत्रों में निवश करने में रूचि रखता है। साथ ही, निकोशिया में मास्को से बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। साइप्रस के राजस्व में पर्यटन की हिस्सेदारी 30 प्रतिशत है।[12]

निर्यात, निवेशों और पर्यटन के अलावा, साइप्रस की अचल संपत्ति और बैंकिग क्षेत्र में रूसियों की बड़ी हिस्सेदारी है। 25 प्रतिशत से अधिक बैंक जमापूंजी/डिपोजिट और लगभग एक तिहाई विदेशी निवेश रूस से आते हैं।[13] जब साइप्रस आर्थिक संकट से प्रभावित हुआ तब रूस ने इस देश को वर्ष 2011 में 4.5 प्रतिशत के बाज़ार दर से कम पर 2.5 अरब यूरो का ऋण दिया जो वर्ष 2016 में परिपक्व होगा।[14] जुलाई, 2012 में एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान साइप्रस के पूर्व राष्ट्रपति देमेत्रिस क्रिसतोफिया ने कहा कि रूस द्वारा ऋण के लिए दी गई शर्तें यूरापीय संघ की शर्तों से ज्यादा अनुकूल थीं क्योंकि इसमें कोई शर्त नहीं थोपी गई और कम ब्याज दर का प्रस्ताव दिया गया।[15]

वर्ष 2012 में साइप्रस ने 5 अरब यूरो के एक और ऋण की मांग की जिसे साइप्रस के समुद्र तट के हाइड्रोकार्बन भंडार में हिस्सेदारी और भूमध्यसागर में हर मौसम अनुकूल पत्तन के लाभप्रद प्रस्ताव के

बावजूद रूस ने ठुकरा दिया। रूस के इनकार के पीछे निम्नलिखित कारण थे:

- वर्ष 2014 में सोची ओलंपिक और वर्ष 2018 के फुटबॉल विश्व कप पर अनुमान से बहुत अधिक वित्तीय खर्च।
- मास्को में तत्कालीन आगामी चुनाव, जिसमें राष्ट्रपति पुतिन को एक ऐसे देश को धन प्रदान करने के लिए जनता को जवाब देना था जो रूसी अवैध धन के लिए सुरक्षित गंतव्य था।[16]
- यूरोपीय संघ (EU) ने बेलआउट बातचीत के दौरान रूस को शामिल करने से इनकार कर दिया था।

वर्ष 2013 में यूरोपीय संघ (EU) और साइप्रस ने मास्को की सहायता के बिना 13 अरब यूरो ऋण संबंधी एक करार कर लिया। यूरोपीय संघ (EU) ने 20,000 यूरो तथा 100,000 यूरो के बीच की बचत पर 6.75 प्रतिशत का एकबारगी (वन ऑफ) टैक्स तय करने और 100,000 यूरो से अधिक की बचत पर 9.9 प्रतिशत की कमी/छूट की शर्त लगाई, जो (धन) रूसी व्यापारियों के थे।[17] यूरो क्षेत्र ट्रोइका (जिसमें यूरोपीय आयोग, यूरोपीय केन्द्रीय बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष शामिल थे) ने स्पष्ट संकेत भेजे कि यह नहीं चाहता कि रूस किसी यूरोपीय संघ (EU) सदस्य राष्ट्र को उबारने वाला बने और जर्मन चांसलर एनजेला मर्केल ने अलग से कोई सौदा करने के विरूद्ध साइप्रस को स्पष्ट चेतावनी दी।[18]

मास्को द्वारा ऊर्जा कूटनीति को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने के अलावा रूस और यूरोपीय संघ (EU) के बीच संबंध खराब होने का कारण मार्च 2013 की घटना थी, जब रूसी सरकारी अधिकारियों ने मानवाधिकार संबंधी मुद्दों पर काम कर रहे अन्य यूरोपीय संगठनों सहित जर्मन गैरसरकारी संगठनों पर छापे मारे।[19] साइप्रस में रूस के कुलीनों के धन से निपटने संबंधी चांसलर मर्केल का कठोर रूख इसी असंतोष और वर्ष 2013 में तय घरेलू चुनाव से उपजा हुआ माना गया था। करदाताओं के धन को साइप्रस को बेलआउट करने में लगाने की आवश्यकता के प्रति जर्मन मतदाताओं को संतुष्ट करना अत्यंत कठिन होता, जिसकी परिणति रूसी कुलीनों को मदद करने के रूप में होती।[20]

हालांकि, ऐसा प्रतीत होता है कि रूसी निवेशकर्ताओं को आनेवाले वर्षों में लाभ मिलेगा। साइप्रस केन्द्रीय बैंक द्वारा जुलाई, 2013 में घोषित की गई शर्तों के तहत, साइप्रस बैंक के बड़े निवेशकों के 47.5 प्रतिशत धन जबरन शेयरों में बदल दिए जाते, जो मूल योजना में उल्लिखित 37.5 प्रतिशत से बढ़ी हुई होती। अवरूद्ध धन वाले ग्राहकों का प्रतिनिधित्व कर रहे वकीलों ने अनुमान लगाया कि एक समूह के रूप में रूसी लोगों को अंतत: बैंक के नए शेयरों का लगभग 60 प्रतिशत मिल जाएगा।[21] वर्ष 2013 में, छह रूसियों

को साइप्रस बैंक[22] में शेयरहोल्डर के रूप में चुना गया था, जो रूसी कुलीनों के धन पर साइप्रस की निर्भरता को प्रदर्शित करता है।

साइप्रस की चिन्ताएं

यूक्रेन के संकट तथा रूस द्वारा इसकी प्रतिक्रिया में पश्चिम पर लगाए गए प्रतिबंधों ने साइप्रस की ऋणग्रस्त अर्थव्यवस्था के लिए स्थिति को कठिन बना दिया है। रूस ने निकोशिया के खाद्य निर्यातों पर प्रतिबंध लगा दिया है जिससे इस द्वीप को बड़ी हानि का सामना करना पड़ रहा है। यह रूस पर लगे प्रतिबंधों के कारण पर्यटन के व्यवसाय में भी हानि उठा रहा है। निकोशिया बड़ी संख्या में रूस से आनेवाले पर्यटकों से लाभ उठाता है। साइप्रस की अर्थव्यवस्था का 30 प्रतिशत पर्यटन से आता है।[23] रूस पर लगे प्रतिबंधों के (कु)प्रभाव तथा पर्यटन के व्यवसाय में हानि ने साइप्रस तथा कुछ अन्य देशों, जैसे यूनान तथा हंगरी, को मास्को पर यूरोपीय संघ (EU) के प्रतिबंधों के विरूद्ध आवाज उठाने पर मजबूर कर दिया है।

कमजोर आर्थिक परिस्थितियों और यूरोपीय संघ (EU) के मितव्ययिता (सम्बन्धी) विनियमों ने साइप्रस को पश्चिम तथा रूस के बीच तनाव कम करने के तरीकों पर विचार करने पर मजबूर कर दिया है। साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस अनस्तासियादिस ने फरवरी, 2015 में यूक्रेन के संकट के समाधान और मिन्स्क करार का अनुमोदन करने के लिए रूस की ईमानदारी पर वक्तव्य दिया।[24] पश्चिम के प्रति साइप्रस के राष्ट्रपति के अपील के स्वर सामान्य व्यापार की वापसी के लिए रूस और पश्चिम के बीच मुद्दों को सुलझाने के लिए थे। साइप्रस के लिए यह महत्वपूर्ण है कि रूस द्वारा इसके निर्यातों पर प्रतिबंध उठा लेने के साथ-साथ रूसी पर्यटकों की वापसी और इस द्वीप में रूसी व्यापारियों द्वारा निवेश जारी रहे, ताकि वे अपने ऋण से उबर सकें।

रूसी और साइप्रस गठबंधन का औचित्य तथा रणनीतियां

लड़खड़ाती आर्थिक अवनति और यूरोपीय संघ (EU), अमरीका और नाटो के साथ युद्धरत संबंध के कारण रूस अपनी कुशल कुटनीति के माध्यम से साइप्रस तथा यूनान जैसे देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहा है, जिन्हें यूरोपीय संघ (EU) से शिकायतें हैं।

फरवरी, 2015 में, लिमासोल पत्तन तथा पाफोस एयरबेस[25] को रूसी नौसेना को पट्टे पर दिए जाने संबंधी रक्षा सौदे पर दोनों देशों के बीच हस्ताक्षर हुए, जिससे अमरीका व्याकुल हो गया। रूसी नौसेना घनिष्ठ रक्षा संबंधों को कायम रखते हुए पूर्व सोवियत संघ के समय से ही साइप्रस के पत्तनों का उपयोग करती रही है। तथापि, फरवरी सौदा इस करार के सामयिक होने के कारण महत्वपूर्ण है। मास्को के संबंध पश्चिम के साथ टकराव भरे हैं और इस (सौदे) पर हस्ताक्षर करके इसने रूस के विरूद्ध एकजुट पश्चिमी

मोर्चे को तोड़ने की राष्ट्रपति पुतिन की ताकत को दर्शाया है और इस क्षेत्र में यूरोपीय देशों पर अपनी बची-खुची शक्ति के प्रभाव को साबित किया है। इस सौदे ने पश्चिम, विशेष रूप से अमरीका के साथ, एक सकारात्मक नोट उत्पन्न नहीं किया है, इस डर के कारण कि रूस भूमध्यसागर क्षेत्र में उनकी शक्ति को सीमित करने के लिए साइप्रस का उपयोग करेगा।

फरवरी करार के संबंध में साइप्रस के साथ अमरीका और पश्चिम का मनमुटाव लीमासोल पत्तन और पाफोस हवाई अड्डे की अवस्थिति के कारण है। यह पत्तन और यह हवाई अड्डा ऐसी स्थिति में अवस्थित है जो वणिज्यिक तथा सैन्य रूसी जहाजों तथा विमानों को अकरोती के ब्रिटिश अड्डे के निकट डॉकिंग (docking) की सुविधा प्रदान करता है। रूस तथा पश्चिम के बीच कड़वाहट भरे संबंध रूसी जहाजों तथा विमानों की डॉकिंग को अवांछित चाल बना देता है। यह उस क्षेत्र में अमरीका तथा पश्चिम के प्रवेश (शक्ति) की संभावना को ऐसे अप्रत्याशित परिस्थिति के समय में कमज़ोर बनाता है, जब मास्को और अमरीका अथवा अन्य पश्चिमी देश टकराव की स्थिति में आ सकते हैं।

वर्तमान में, रूस को टार्टस सीरियाई पत्तन पर अपनी नौसैनिक सुविधा उपलब्ध है, जो रूसी नौसेना को भूमध्यसागर में सीधा प्रवेश करने के लिए एकमात्र माध्यम प्रदान करती है। यदि रूस लीमासोल पत्तन का उपयोग कर सके, तो यह सुदूर पूर्व क्षेत्र में अपनी उपस्थिति का विस्तार कर सकता है और भविष्य में इससे विस्तारित ऊर्जा नेटवर्क कायम करने में सहायता मिलेगी। इसे *गर्म पानी* वाले सागरों तथा महासागरों तक प्रवेश की आवश्यकता है। वर्ष 2013 के अपने विदेश नीति दस्तावेज में और अपने सैन्य सिद्धांतों में भी, रूस ने यूरेशिया में अपनी उपस्थिति का विस्तार करने का दृष्टिकोण व्यक्त किया है। एटलांटिक सागर से एशिया प्रशांत सागर तक फैला समुद्री मार्ग गर्म जल मार्ग है। रूस, जो चारो तरफ से भूमि से घिरा देश है, अपने विकास के लिए गर्म जल में प्रवेश के लिए हमेशा से संघर्ष करता रहा है। गर्म जल में स्थित द्वीप के रूप में साइप्रस की रणनीतिक अवस्थिति के कारण रूस को पूर्वी भूमध्यसागर में जहाजों को लाने की अनुमति होगी, जो इसे पश्चिमी एशिया विशेषकर सीरिया, मिस्र और अरब प्रायद्वीप के पास तक प्रवेश दिलाएगा। इससे रूस को स्वेज नहर और एक नाटो सदस्य, तुर्की के निकट पहुंचने में भी सहायता मिलेगी।[26]

दूसरी बात, इसे पश्चिम विशेषकर नाटो के मास्को को घेरने और वैश्विक व्यवस्था में इसके प्रभाव को कमज़ोर करने की चाल को दरकिनार करना है। यह महसूस करता है कि पश्चिम, विशेषकर अमरीका इसके प्रभाव को कम करने का प्रयास कर रहा है; एक ऐसी भावना, जो जारी यूक्रेन संकट, नाटो के विस्तार और परस्पर विरोधी अवधारणाएं, जो सीरियाई संकट जैसी किसी भी वैश्विक चुनौती में रूस और पश्चिम

विशेषकर अमरीका की होती हैं, से पुष्ट होती है।[27] तीसरी बात, रूस को अपनी ऊर्जा कूटनीतियां के विस्तार के लिए इस क्षेत्र में प्रवेश की आवश्यकता है। इसकी रूचि अफ्रीका में ऊर्जा परिसम्पत्तियों में है और सूडान जैसे पूर्व मध्य अफ्रीकी देशों सहित इस क्षेत्र में ऊर्जा सौदे में है। इस ऊर्जा परिदृश्य में, साइप्रस के मार्ग से होकर रूस अथवा यूरोप से पश्चिम एशिया और अफ्रीका तक पहुंचने में कम समय लगता है।[28] अंतराष्ट्रीय प्रणाली में एक अपरिहार्य खिलाड़ी के रूप अपनी स्थिति पुन: प्राप्त करने की बड़ी योजनाओं के साथ ही रूस की प्रधान रणनीति में साइप्रस महत्वपूर्ण है।

इस बीच साइप्रस गंभीर आर्थिक ऋण में फंसा हुआ है और यह यूरोपीय संघ (EU) बेलआउट के साथ-साथ रूसी कर से जुझ रहा है। वित्तीय ऋण के साथ-साथ द्वीपीय संघर्ष पर तुर्की से उत्पन्न सुरक्षा खतरे के कारण यह दोनों में से किसी भी पक्षकार से विरोध मोल नहीं ले सकता है। रूस के साथ एक सुदृढ़ संबंध कायम रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि मास्को इस द्वीप के विभाजन के संबंध में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में यूनानी-साइप्रसवासियों का समर्थन करता है। साथ ही, आईएसआईएस संकट इसके पड़ोस में बुरी तरह मंडरा रहा है और साइप्रस तथा रूस इस्लामिक अतिवाद को अपनी सुरक्षा के खतरे के रूप में देखते हुए इसके विरूद्ध समान प्रकार की भावना रखते हैं। रूस का सीरियाई राष्ट्रपति बशर-अल-असद और उसके शासन के साथ अच्छा संबंध है। यह इस शासन को इस्लामिक कट्टरपंथियों के विरूद्ध दीवार के रूप में देखता है।[29]

साइप्रस ने हाल ही में समुद्र तट के आस-पास तेल तथा गैस की खोज की है। इसका अन्वेषण/ दोहन करने के लिए इसे इस संबंध में अन्वेषण तथा परमर्श करने के लिए अमरीका सहित अन्य पश्चिमी देशों के अलावा रूस की विशेषज्ञता की आवश्यकता पड़ेगी। अत: पश्चिम को नाराज किये बिना रूस के साथ शांति संबंध बनाए रखना साइप्रस के लिए लाभप्रद है।

निष्कर्ष

यूरापीय संघ के नाराज सदस्यों जैसे साइप्रस के साथ अपने संबंधों को पुन: मजबूत करना रूस के क्षेत्रीय तथा वैश्विक मामलों में पश्चिम के, विशेषकर अमरीका के उद्देश्यों में रूकावट डालने सहित वैश्विक व्यवस्था में अपनी स्थिति बनाए रखने में रूस के लिए मददगार होगा।

एक छोटा द्वीपीय राष्ट्र होने के कारण साइप्रस को रूस तथा पश्चिम के साथ अपने संबंधों के बीच संतुलन कायम रखने की आवश्यकता है। निकोशिया को दोषी (डिफॉलटर) देश बनने (से बचने) के लिए यूरोपीय संघ (EU) से राजकोषीय सहायता महत्वपूर्ण है। यह अन्य समस्याओं का भी सामना करता है, जैसे कर-मुक्त क्षेत्र बनना, धन का अवैध प्रवाह और यूरोप प्रवास हेतु पारगमन बिंदु बनना, जो और भी वित्तीय

तथा सुरक्षा चिंताएं पैदा करता है। इसी प्रकार, हालांकि रूस की अर्थव्यवस्था इस समय कमजोर है, फिर भी, सुरक्षा तथा आर्थिक मामलों में इस देश को मदद करने की क्षमता इसके पास है।

ऐसा प्रत्याशित है कि अगर निकोशिया के ऊर्जा व्यापार निकट भविष्य में कार्यात्मक हो जाते हैं, तो रूस तथा इस द्वीप के बीच समस्या उभरकर सामने आ सकती है जो मास्को को तुर्की के पक्ष में धकेल सकती है और साइप्रस के लिए खतरनाक स्थिति पैदा कर सकती है। नाटो इन देश की सुरक्षा कहां तक कर पाएगा, इस पर रूस तथा तुर्की की रक्षा आधुनिकीकरण को देखते हुए प्रश्न चिन्ह होगा। वर्तमान में यूरोपीय संघ (EU) की सदस्यता पर रूकावट के कारण पश्चिम के साथ तुर्की के संबंध शांतिपूर्ण नहीं है।

यूरोपीय संघ (EU) साइप्रस के ऊर्जा लाभांशों से लाभान्वित हो सकता है, लेकिन यह अपने पड़ोस में एक सुदृढ़ विरोधात्मक नेक्सस को मजबूती प्रदान करेगा, रूस तथा तुर्की का गठजोड़, जिसका इस क्षेत्र के अन्य भागों में प्रभाव होगा, जो पश्चिम के लिए महत्वपूर्ण है।

***

*_डॉ. इंद्राणी तालुकदार विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।_

समाप्ति नोट:

[1] जेम्स लेह और प्रेड्राग वुकोवीक, "साइप्रस की भूराजनीति", *रुबिन केंद्र*, 22 दिसम्बर, 2011 http://www.rubincenter.org/2011/12/a-geopolitics-of-cyprus/ (21 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[2] ब्रिटेन इन अड्डों को पट्टे पर अमरीका और नाटो को देता है।

3. वन केत्सीनेरिज़, "साइप्रस: वाशिंगटन नए सैन्य अड्डे चाहता है", ग्रीन लेफ्ट, 17 नवंबर, 1993 https://www.greenleft.org.au/node/29885 (22 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)

4. लासन एथानासीयादी, "अमेरिका संयुक्त साइप्रस पर बड़ा सैन्य अड्डा चाहता है", *एशिया टाइम्स ऑनलाइन*, 10 अप्रैल, 2004. http://www.atimes.com/atimes/Middle_East/FD10Ak04.html (21 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

5. "छोटे विकासशील देशों के बारे में, यूएन-ओएचआरएलएलएस. http://unohrlls.org/about-sids/ (28 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

6. अनास्टासियोस पापपोस्टोलो, "साइप्रस में अमरीका की वर्तमान रूचि: "विश्वास, किन्तु सत्यापन", *यूनान अमरीका संवाददाता*, 30 जुलाई, 2014. http://usa.greekreporter.com/2014/07/30/usa-interest-in-cyprus-trust-but-verify/ (21 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

7. जॉन हॉल, "पुतिन ने दी परमाणु युद्ध की धमकी: रूसी नेता नाटो को बाल्टिक्स से बाहर खदेडने और क्रीमिया की रक्षा करने के लिए कोई भी आवश्यक कदम उठाएंगे।", *डेली मेल*, 2 अप्रैल, 2015. http://www.dailymail.co.uk/news/article-3022793/Putin-threatens- nuclear-war-Russian-leader-necessary-step-drive-Nato-Baltics-defend-Crimea.html (21 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

8. इगोर डेलनो, "साइप्रस, बदलते पूर्वी भूमध्य सागर में एक रूसी कदम", *रुबिन केंद्र*, 4 अगस्त, 2013. http://www.rubincenter.org/2013/08 /cyprus-a-russia-foothold-in-the-changing-eastern-mediterranean (25 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया।)

9. राजोश्री रॉय, "रूस और साइप्रस को बेलआउट/खैरात की भूराजनीति", *आईडीएसए*, 14 जून, 2013. http://www.idsa.in/backgrounder/RussiaandtheGeopoliticsofCyprusBailout.html (29 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

10. "साइप्रस-रूस व्यापार संबंध", *ऊर्जा, वाणिज्य, उद्योग और पर्यटन मंत्रालय*, जून 2014. http://www.mcit.gov.cy/mcit/trade/ts.nsf/All/8A346235DFDE026BC2257CE10045B2CD/$/फाइल /साईप्रस- ruissia% 20Trade % 20Relations % 20 (जून % 202014). पीडीएफ (30 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

11. "यूरोपीय संघ (EU) के प्रतिबंधों के बावजूद साइप्रस-रूस निवेश बढ़ना तय है",*स्पुतनिक समाचार*, 6 मार्च , 2015. http://sputniknews.com/business/20150306/1019158262.html (2 मई, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[12] *"रूस का आर्थिक संकट साइप्रस को मंदी के दौर में रख सकता है, विश्लेषक कहते हैं"*, द मास्को टाइम्स, *14 जनवरी, 2015. http://www.themoscowtimes.com/business/article/russia-s-economic-crisis-could-keep-cyprus-in-recession-analysts- say/514380.html (23 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।*

[13] ल्यूक हार्डिंग, "साइप्रस पर रूसी विदेशी आक्रमण का भी है भयावह मकसद", *द गार्जियन*, 26 जनवरी, 2012. http://www.theguardian.com/world/2012/jan/26/cyprus-russian-invasion (28 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[14] डेलनो, "साइप्रस, एक रूसी कदम", ओपी सीट.

15"साइप्रस को रूस द्वारा यूरोपीय संघ (EU) और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की पेशकश से बेहतर बेलआउट/खैरात का प्रस्ताव, राष्ट्रपति का कहना है, *द टेलीग्राफ*, 5 जुलाई, 2012. http://www.telegraph.co.uk/finance/financialcrisis/9377443/Cyprus-offered-better-bail-out-conditions- by-Russia-than-EU-and-IMF-says-president.html (2 मई, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[16] रॉय, "रूस और भूराजनीति", ओपी. सीआईटी.

[17] " 'योजनाबद्ध' बेलआउट/खैरात पर ईसीबी द्वारा योजना ख बेलआउट", *आर टी*, 21 मार्च, 2013. http://rt.com/business/cyprus-vote-plan-as-ecb-sets-deadline-monday-586/ (28 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[18] यूरी एम. ज़ुकोवा, "साइप्रस और रूस ने केवल संबंध विच्छेद ही नहीं किए", विदेश मामले, मार्च 2013. https://www.foreignaffairs.com/articles/russian-federation/2013-03-29/cyprus-and-russia-did-not-just-break (2 मई, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[19] स्तानिस्लोव कुवाल्दीन, "अधिकारी 'विदेशी एजेंटों' के लिए गैर सरकारी संगठनों की तलाश में हैं', रसिया बियांड द हेडलाइन्स, 27 मार्च, 2013. http://rbth.com/politics/2013/03/27/authorities_search_organizations_for_foreign_agents_24325.html (3 मई, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[20] रॉय, "रूस और भूराजनीति", ओपी. सीआईटी.

[21] एंड्रयू हिगिंस, "साइप्रस ने बैंकों के बेलआउट/खैरात का स्वामित्व रूसी प्लूटोक्रैटों को सौंपा", *न्यूयॉर्क टाइम्स*, 21 अगस्त, 2013. http://www.nytimes.com/2013/08/22/world/europe/russians-still-ride-high-in-cyprus-after-bailout.html?module=ArrowsNav&contentCollection=Europe&action=keypress®ion=FixedLeft&pgtype=article (3 मई, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[22] पीटर मार्टिनों, "साइप्रस: रूस का अगला शिकार?" *गेट्सटोन संस्थान*, 14 जनवरी, 2013. http://www.gatestoneinstitute.org/3539/cyprus-russia (27 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[23] *"रूस का आर्थिक संकट साइप्रस को मंदी के दौर में रख सकता है, विश्लेषक कहते हैं"*, द मास्को टाइम्स, *14 जनवरी, 2015. http://www.themoscowtimes.com/business/article/russia-s-economic-crisis-could-keep-cyprus-in-recession-analysts- say/514380.html (23 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।*

[24] एंड्रयू हिगिंस, "नकद लहराकर, पुतिन ने प्रतिबंधों को तोड़ने के प्रयास में यूरोपीय संघ (EU) के बंटवारे का बीज बोया", *न्यूयॉर्क टाइम्स*, 6 अप्रैल, 2015. http://www.nytimes.com/2015/04/07/world/europe/using-cash-and-charm-putin-targets- europes-weakest-links.html?_r=0 (21 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[25] "साइप्रस ने 'सैन्य अड्डों के संबंध में रूसी सौदे' से इनकार किया", बीबीसी समाचार, 9 फरवरी, 2015. http://www.bbc.com/news/world-europe-31293330 (22 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[26] ट्रैविस वेन्टवर्थ, "रूस के अन्य युद्ध-साइप्रस नौसेना के बंदरगाह", *एनवीसी समीक्षा*, 3 मार्च, 2015. http://www.nvcreview.com/russias-other-war-cyprus-naval-ports/ (4 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[27] अरब क्रांति के दौरान, हालांकि रूस सीधे तौर पर शामिल नहीं था, लेकिन यह परस्पर विरोधी दलों के बीच समाधान के एक माध्यम के रूप में वार्ता का समर्थन करके इस क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार करने की कोशिश कर रहा था। मिस्र में सेना द्वारा मुस्लिम ब्रदरहुड को निकाले जाने के बाद, इसने जल्दी से सैन्य सरकार की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया, जिसके कारण मिस्र और अमेरिका के बीच के सदियों पुराने संबंध आसानी से कमजोर हुए। मास्को ने अपनी निपुण कूटनीति से तुर्की और ईरान के साथ भी अपने संबंधों को सुदृढ़ किया है।

[28] पूर्वोक्त।

[29] इंद्राणी तालुकदार, "सऊदी अरब और रूस के बीच मतभेद", विश्व मामलों की भारतीय परिषद, फ़रवरी 25, 2015. http://www.icwa.in/pdfs/VP/2014/VPDissonance24022015.pdf (7 मई, 2015 को एक्सेस किया गया)।